IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138
INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जनजातीय समाज के अंतर्गत एक वैज्ञानिक जनजाति – अगरिया

[JANJATIYA SAMAJ KE ANTARGAT EK VAIGYANIK JANJATI – AGARIYA]

डॉ. अजय कुमार शुक्ल
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी)
कला एवं मानविकी संकाय
कलिंगा वि.वि. नया रायपुर (छ.ग.)

शोध सारांशः–

अगरिया जनजाति भारत के आदिम जनजातियों में सम्मिलित है। लौह अयस्क की पहचान करके परंपरागत रूप से लोहा बनाने में इस जनजाति के लोगों को महारत हासिल है। माना जाता हैं कि प्राचीन समय से यह लौह–शिल्प–कला में निपुण हैं। इनके द्वारा बनाए गए लोहे की भारी मांग है क्योंकि वह जंगरहित होता है। प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखते हुए यह लोहा बनाते है। इनकी तकनीक और शिल्प को देखते हुए इन्हे वैज्ञानिक जनजाति की संज्ञा से विभूषित किया जा सकता है।

बीज शब्दः–

जनजाति, अगरिया, इतिहास, लोहा, वैज्ञानिक जनजाति।
[JANJATI, AGARIYA, ETIHAS, LOHA, VAIGYANIK JANJATI]

प्रस्तावनाः–

सदियों से जंगल, पहाड़, दुर्गम और बीहड़ क्षेत्र में निवास करने वाली जनजातियों का स्वर्णिम इतिहास रहा है। उनकी कला–संस्कृति और परंपराओं के साथ उनका वैज्ञानिक दृष्टिकोण सभ्य समाज को सदैव चकित करता रहा है। भारतवर्ष के छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश झारखंड और उत्तरप्रदेश में निवास करने वाली अगरिया जनजाति इन जनजातियों में एक प्रमुख जनजाति है, जो जंगरहित लोहा और उससे निर्मित विभिन्न शिल्पकला में प्रवीण है। प्रस्तुत शोधपत्र वैज्ञानिक और शिल्पी जनजाति अगरिया पर केन्द्रित है। जहाँ उनके इतिहास के साथ उनके लोहा बनाने की तकनीक और कला पर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

जनजाति की अवधारणा :–

जनजाति शब्द अंग्रेजी भाषा के **TRIBE** शब्द का हिन्दी पर्याय है। ट्राइब शब्द लैटिन भाषा के 'ट्राइब्स' शब्द से बना है। पहले रोम में इस शब्द का प्रयोग समाज के विभिन्न भागों के लिए किया जाता

था। बाद में इसका प्रयोग समाज के निर्धन वर्ग के लिए होने लगा। हिन्दी शब्दकोश में इसका अर्थ – ''जंगलों, पहाड़ों आदि में रहने वाले ऐसे पिछड़े लोगों का समूह जो साधारणतः एक ही पूर्वज के वंशज होते हैं'' दिया गया है। ऐतिहासिक तथ्यों के निरीक्षण के उपरांत यह तथ्य उभर कर सामने आता है कि भारतवर्ष में ब्रिटिश शासन ने यहाँ के निवासियों को अलग–अलग करने के लिए उन्हें ट्राइब की संज्ञा दे डाली, जबकि भारत के पौराणिक ग्रंथों में इन्हें अपने नाम से जाना जाता रहा है जैसे– भील, कोल, किरात, निषाद आदि।

दरअसल भारतवर्ष में सभ्यता एवं संस्कृति से दूर दुर्गम वन क्षेत्रों एवं पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करने वाले अनेक मानव समुदाय मानव सभ्यता के विकास क्रम से पृथक रह गये थे, फलतः विकास का प्रकाश वहाँ नहीं पहुंच पाया। इन दुर्गम और पृथक क्षेत्रों में निवास करने जन को विकसित समुदाय ने आदिवासी, जनजाति, आदिम जाति, वन्य जाति, वनवासी आदि नाम दिया। भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 में जनजातियों की संख्या 212 थी जो 1991 में 560 और वर्तमान में 705 हो गयी है। हर्बर्ट रिजले ने भारत में रहने वाली जनजातियों को मुख्यतः 3 प्रजातियों से संबंधित माना है– मंगोलियन, द्राविड़ियन और इण्डो आर्यन। ये जनजातियां देश के विभिन्न भागों में सघन वनों, दुर्गम पहाड़ों, पठारों और पिछड़े इलाकों में निवास करती है। छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश, देश के विभिन्न राज्यों की तुलना में सर्वाधिक विशाल जनजाति जनसंख्या बहुल राज्य है। छत्तीसगढ़ प्रदेश में 2011 के आंकड़ों के अनुसार अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 78,22,902 है जो कि यहाँ की कुल जनसंख्या का 30.62 प्रतिशत है। छत्तीसगढ़ प्रदेश में अनुसूचित जनजाति समूह की संख्या 42 है। छत्तीसगढ़ राज्य में अनुसूचित जनजातियों की सर्वाधिक जनसंख्या सरगुजा जिले में है।

शिल्पी और वैज्ञानिक जनजाति अगरिया का परिचय :–

आमतौर पर जनजातिवर्ग को पिछड़ा एवं तकनीक से रहित माना जाता है, जबकि अगरिया जनजाति पारम्परिक रूप से लौह अयस्कों की खोज, अयस्कों को पिघलाकर लोहा प्राप्त करने, स्वयं निर्मित लोहे से धातु के कृषि प्रधान उपकरण और औजार आदि शिल्पों के निर्माण से संबद्ध जनजाति है। अगरिया को अत्यंत महत्वपूर्ण आदिम जनजाति या प्रिमिटिव्ह ट्राइब के रूप में जाना जाता है। भारतवर्ष में लौह खनिज को पिघलाकर लोहा बनाने वाली मुख्यतः दो जनजातियां अगरिया और गौड़ लोहार का संबंध छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश से है। इस शिल्प के लिए अगरिया जनजाति विशेष ख्यात है। लौह अयस्कों से धातु प्राप्त करने की विधि और कौशल से संबंध यह अगरिया जनजाति छत्तीसगढ़ के सरगुजा, कोरिया, जशपुर, झारखंड के नेतरहाट, गुमला, रॉची एवं मध्यप्रदेश के शहडोल, सीधी, बालाघाट, मंडला, डिंडौरी एवं उत्तरप्रदेश में मिर्जापुर, आगरा आदि जिलों में मुख्यतः निवास करती है।

अगरिया जनजाति :– इतिहास

अगरिया शब्द का विकास आग या अग्नि से हुआ है। यह असुर जाति की उपशाखा है। वेरियर एल्विन ने ''द अगरिया'' पुस्तक में लिखा है कि ''अगरिया और असुर उसी आदिवासी समूह के वंशज है। जिनका उल्लेख संस्कृत धार्मिक ग्रंथों में असुरों के रूप में किया जाता है। अगरिया बेल्ट मिर्जापुर, रीवा से लेकर रॉची तक है। रीवा में लौह अयस्क की खदानों के लिए अगर शब्द का प्रयोग मिलता है एवं सरगुजा जिले के उदयपुर के अगर साय को लोहितपुर नामक लौह शहर के राजा के रूप में चिन्हित किया गया है। एल्बिन ने अगरिया जनजाति को पडरिया अगरिया, खलहा अगरिया, चोख और महाली अगरिया के रूप में वर्गीकृत किया है।'' अगरिया जनजाति अपनी उत्पत्ति लोहासुर से मानते है, जिसका लोहागुंड़ी नाम का साम्राज्य पांडवों के साथ युद्ध में नष्ट हो गया था। वह लोहासुर (लोहा), अग्यासुर (अग्नि) और कोयलासुर

(कोयला) के प्रति गहन आस्था रखते है। वे सूर्य को अपना शत्रु मानते है। इसीलिए अगरिया की भट्ठी केवल रात में ही जलती है। कुछ लोगों का मानना है कि यह महिषासुर के वंशज है। यह रावण के प्रति आस्था रखते है और नवरात्रि एवं दशहरा नहीं मनाते है।

सामान्य तौर पर भाथी या धौंकनी के प्रकार के अनुसार अगरिया समुदाय के दो वर्गीकरण किया गया है– एक पथरिया और दूसरा खुँटियां अगरिया है। वह अगरिया समुदाय जिसने प्रारंभिक अवस्था में भाथी के साथ पत्थर का इस्तेमाल किया, वह पथरिया अगरिया कहलाया, जबकि लकड़ी की खूंटी गाड़कर जिस समुदाय ने लौह अयस्कों को पिघलाने के लिए भाथी का उपयोग किया, वह खुँटियां अगरिया कहलाया। अगरिया शिल्पियों के बीच यह स्थिर मान्यता प्रचलित है कि वे संसार के पहले लोग हैं जिन्होंने अगियासुर देव की कृपा से पृथ्वी के प्रारंभ से ही एक जाति या समुदाय के रूप में इस पृथ्वी पर उपस्थित है। यानी पृथ्वी के प्रारंभ से ही अगरिया जनजाति यहाँ निवास करती है। सबसे पहले उसी ने लौह अयस्कों के रूप में मिट्टी और पत्थर के साथ धातु की उपस्थिति को जाना और सर्वप्रथम उन्होंने ही इस संसार में मिट्टी और पत्थर से लोहा को अलग करना सीखा और अन्य समुदाय के लिए लोहे से निर्मित विभिन्न शिल्पों का निर्माण किया। अगरिया ने ही सबसे पहले हल और फाल का निर्माण किया।

अगरिया जनजाति में लोहियासुर, अगियासुर और कोयलासुर का उल्लेख देवताओं के रूप में प्राप्त होता है। एक समय था जब देव प्रतिमानीकरण जड़ और चेतन के साथ–साथ कर्म एवं संज्ञाओं के लिए किया जाता है। आग या अग्नि को आज भी देव के रूप में विशेष मान्यता प्राप्त है। अग्नि और असुर का विस्तृत उल्लेख ऋग्वेद में भी मिलता है। अगियासुर लोहासुर और कोयलासुर नामों से अगरिया का सीधा संबंध आग, लोहा और कोयला से जुड़ता है अर्थात् अगरिया समुदाय का आग, लोहे और कोयले के अनुभव, ज्ञान और उसकी तकनीक पर आरम्भ से ही महारत रही होगी। अगर साय के अलावा लौंगुड़ी राजा का उल्लेख अगरिया समुदाय के नायक के रूप में प्राप्त होता है। लौगुंडी राजा को कई बार लोहिड़ी या लोहिनी राजा के रूप में जाना जाता है।

निवास एवं रहन–सहनः–

अगरिया जनजाति जिसे प्रिमिटिव्ह ट्राइब्स के रूप में मान्यता मिली है, आज भी पहाड़ी श्रृंखलाओं के साथ उसकी तलहटी या आसपास के क्षेत्रों में निवास करती है। दूरस्थ क्षेत्रों में निवास करने वाली इस जनजाति का जीवन, रहन–सहन, खान–पान, रीति–रिवाज, पर्व–त्यौहार, मान्यताएँ और विश्वास के साथ में रहने वाली जनजातीय क्षेत्रों की तरह मिलती–जुलती है। अगरिया के आसपास गोंड़, परधान, बैगा, उरॉव, पण्डों, कंवर और कोरवा आदि जनजातियां मुख्यतः निवास करती हैं। विरल रूप में या डिहारी कोरवा, अहीर, रजवार एवं अन्य सामान्य एवं पिछड़ी और अनुसूचित जातियों के लोगों के साथ निवास करते है।

अगरिया जनजाति के घर मिट्टी, खपरैल, लकड़ी और बांस से निर्मित अत्यंत सादे होते हैं। इनके घरों की परछी, दालान में या घर के सामने मचान के नीचे अगरिया निर्मित भट्ठी होती है। यहीं पर लौह प्रगलन से संबंधित चिमटी, हथौड़ा, भट्ठी, धान की भूसी, लौह अयस्क और लोहे के पुराने टुकड़े आदि होते हैं। आमतौर पर इनके पारंपरिक घर तीन खण्डों में विभक्त होते हैं, मचान, जहाँ पर लौह प्रगलन और शिल्प निर्माण से संबंद्ध प्रक्रियाएं अपनायी जाती है। वह घर के सापने थोड़ी दूरी पर बनायी जाती है। भट्ठी भी इसी मचान के नीचे बनी होती है।

अगरिया समुदाय के लोग मितभाषी, बलिष्ट और परिश्रमी होने के साथ सरल और सामान्य ग्रामीण आर्थिक स्थिति वाले लोग हैं। ये धातुओं से औजार आदि बनाने के साथ–साथ कृषि एवं कृषि व्यवस्था से जुड़ी मजदूरी आदि कार्यो में संलग्न है।

लोहे को गलाना और उसे रूप प्रदान करनाः–

लौह अयस्क, जो मिट्टी पत्थर के बड़े–बड़े टुकड़े में पहाडों या तलहटियों में मिलते है। अगरिया उसे खोदकर घर ले आते हैं। इस कार्य के लिए वह भोर में घर से निकल पड़ते हैं और दोपहर के पहले टोकरी भर कर घर ले आते हैं। जब यह पर्याप्त मात्रा में एकत्रित हो जाती है तब लोहा निकालने का कार्य प्रारंभ होता है। परंपरागत रूप में अगरिया मानते हैं कि सुखे हुए साल या सरई की लकड़ी से तैयार कोयले से प्राप्त अंगारा अधिक अच्छा होता है। साल का पेड़ अधिक ठोस माना जाता है। इसे वह जंगल में ही तैयार कर कोयले को घर ले आते हैं। साल वृक्ष से प्राप्त कोयला के साथ जब लौह–अयस्क को पिघलाया जाता है। तब आवश्यक तापक्रम लगातार बना रहता है। जिस कारण लोहा पिघलकर जल्दी भी प्राप्त होता है और इस लोहे की गुणवत्ता भी अच्छी रहती है। इस प्रक्रिया में भांथी या धौंकनी, बांस, मिट्टी और चमड़े आदि का प्रयोग भी किया जाता है। आधुनिक युग में अगरिया जनजाति के अधिकांश शिल्पी परंपरागत कार्य की श्रमसाध्यता को देखते हुए पुराने लोहे को गलाकर नया रूप प्रदान करते हैं।

दरअसल लौह खनिज को पिघलाने से प्राप्त लोहे को अत्यंत शुद्ध और पवित्र माना जाता है। इसे कुंवारी लोहा भी कहा जाता है। इस संज्ञा के पीछे यह धारणा रही है कि जिस लोहे को अगरिया समुदाय ने पिघलाकर बनाया है, वह अक्षत है। पहले कभी वह अपने शुद्धरूप में नहीं था। मिश्रित अवस्था से शुद्ध कर पहली बार इस लोहे को अगरिया ने बनाया है। इस कारण इसके पहले कभी भी इसका उपयोग सांसारिक और दैनिक कार्यो में नहीं हुआ है। इस कारण इसमें दैवीय शक्तियां भी मौजूद मानी जाती है। यह अगरिया जनजाति का अपना निश्चित विश्वास है।

गहरे लाल और पीले रंग के पत्थरों से प्राप्त इस लोहे से सर्वप्रथम कील बनायी गयी फिर हल के फाल। इसके पश्चात् आखेट, रक्षा, कृषि और घरेलु उपयोग के लिए तीर का फाल, भाला, कुल्हाड़ी, चाकू, हॅसिया, हथौड़ा, खुरपी, फरसा, तलवार, छेनी, खुंटी, फावड़ा, कुदाल, लोहिया, कलछुल, चिमटा, झंझरा, चलनी, तवा, सांकल, संडसी आदि उपकरणों का निर्माण अगरिया जनजाति ने समयानुसार किया है।

अगरिया जनजाति जंगरहित लोहा बनाने के लिए विश्व प्रसिद्ध है। इनके द्वारा बनाया गया लोहा नरम गुण वाला होता है। इस लिए कठोर लोहे की अपेक्षाकृत यह ज्यादा मजबूत होता है। प्राचीन समय में अगरिया जनजाति के द्वारा निर्मित तलवारों को विश्व भर में अजेय माना जाता था। इस बात का ऐतिहासिक प्रमाण है कि इनका लोहा पर्शिया और रोम तक प्रसिद्ध था। उस जमाने में विश्व भर के लोहे के बाजार पर भारत का एकाधिकार था। बाद में अंग्रेजों ने भारत का वर्चस्व तोड़ने के लिए इनके लोहे पर टैक्स लगा दिया था।

राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण के सदस्य प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता मीरा दास के शोध के अनुसार दिल्ली स्थित विश्व प्रसिद्ध लौह स्तम्भ के लिए लोहा मध्यप्रदेश के विदिशा से ही गया था। जिसे अगरिया जनजाति के द्वारा तैयार किया गया था। 23 फीट उंचे इस लौह स्तम्भ का निर्माण गुप्त वंश के प्रभावी शासक चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने ईसवी सन् 375 से 417 के बीच कराया था। आज अशोक स्तम्भ सारी दुनियां में प्रसिद्ध है, 1620 साल बाद भी इस पर जंग नहीं लगा है। जो अगरिया जनजाति के द्वारा तैयार किये हुए लोहे से बनाया गया था।

निष्कर्षः–

उपर्युक्त तथ्यों, विचारों एवं विश्वास के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अगरिया निश्चय ही प्रथम लौह धातु विज्ञानी होंगे। आज से लगभग तीन हजार साल पहले लोहे का पहली बार उपयोग किया गया था और जिन आदिवासी शिल्पियों की हम बात कर रहे हैं, हो सकता है शायद उनके आदिम समय से

न सही परंतु वर्गीकृत लौह युग और उसके पूर्व के प्रस्तर युग से इनका संबंध एक वैज्ञानिक की तरह अवश्य रहा होगा चूंकि इन्होंने सीधे पत्थरों से लोहा निकालने और उसे गलाने की विधि को स्थापित किया है। इस कारण भी लौह या धातु युग के प्रारम्भ और उसके विकास में अगरिया समुदाय की अभुतपूर्व देन इस समाज के लिए है। साथ ही कृषियुग के प्रारंभ, उसकी उन्नति और विकास के लिए भी अपने औजारों के माध्यम से अगरिया समुदाय ने अतुलनीय कार्य किया है।

संदर्भ सूचीः–

1. डॉ. शिव कुमार तिवारी – म.प्र. के आदिवासी, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पृ. 21.
2. उपाध्याय एवं शर्मा – भारत की जनजातीय संस्कृति, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पृ. 213.
3. वेरियर एल्बिन – अगरिया (2007), अनुवाद–प्रकाश परिहार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृ. 16.
4. नवल शुक्ल – मध्य प्रदेश के धातु शिल्प, जनसंपर्क विभाग, म.प्र., पृ. 11–13.
5. नवल शुक्ल – प्रत्यय पुस्तिका से, म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद, पृ. 23.
6. कपिल तिवारी – म.प्र. में लोकाख्यान, जनसंपर्क विभाग, म.प्र., पृ. 36.
7. देवांगन एवं टुटेजा – छत्तीसगढ़ समग्र, इशिता प्रकाशन, बिलासपुर, पृ. 42.
8. सुरेश जगन्नाथम – असुर जीवन से मरण तक, forwardpress.in.
9. राजन कुमार – वीर विरजिया और असुरों का इतिहास, forwardpress.in.
10. डॉ.कमलेश कुमार जैन – चेतना 2001–2002, शा. महाविद्यालय अम्बिकापुर, पृ. 31.
11. सिंह एवं अग्रवाल – हिन्दी शब्द कोश, पृ. 369.
12. लोहा (दैनिक भास्कर), नई दिल्ली, 18 अप्रैल 2016, भोपाल संस्करण मध्यप्रदेश।